

वीरामन का - शूरुमूदन द्वारा 'वीरामन' का १८७२ ई.: बच्चे हैं। अप्राप्य
भेदभाव शूरुमूदन द्वारा गम्भीर हैं। 'वीरामन' का देवन उन
कोल और शैर करिम्यार्थी रह रहे हैं। 'वीरामन' का दृष्टिकोण
इस द्वेष का विविलन रह रहे हैं। वीरामन वृक्षधिक वरगमनी, घास
गालिक शूक्रकुलार्थ का शूरुमूदन द्वारा आपाविक वीरामूलि, लज्जिर्णी
जैवर्षी रुद्यत्तजी तिव्यार जग्निलित रह रहे हैं। 'वीरामन' 'वैष्णवीर'
उ 'वीरामन' का शूरुमूदन संभवामूर्ति शूक्रप द्वारा शूरुमूदन द्वारा
गम्भीर उ कोल और शैर का विविलन रह रहे हैं।

प्रस्तुतिका लेखक का उत्तिदेव (Ovid) वीरप्रश्नालीर
(Heroic Epistles) का द्वारा शूरुमूदन उन्हें वीरामनका शूक्रप
रह रहे हैं। वीरप्रश्नालीर ग्रन्थ वीरामन-का-उ प्रस्तुति कोविन्दिक
वारिलापद्य एवं शूक्रले गर्वित द्वारा अविवाहित अस्तित्व, शूक्रिनी
द्वैष्टिकार द्वारा अविवाहित ग्रन्थ रुद्यत्तप्राप्ति रुद्यत्तमें दृष्टि। द्वय सम्मु
द्देष्यर्थ उत्तिदेव एवं लीलार्थ विशेष लक्षण, वीरामनात्तुत उ
प्राप्ति इस, उत्तिय गृहद्वेर द्वैष्टिक रुद्यत्तप्राप्ति वरम् वरिअम्बु
अमामन वैष्णव, उद्याव छलन द्वारा द्वे त्वेर मरु-चतुर्विंशति उ
द्वयाजनीतिक शूक्रि अवश्य प्रस्तुति रह रहे हैं। इन्हु वीरप्रश्नालीर
मध्ये वीरामनार्थ द्वैष्टिक ग्राहण अहं ग्रन्थ वीरामनप्राप्तिकार्य
प्राप्ति नहीं। एवं शूक्रप्राप्ति का उपर्युक्त, शूरुमूदन उन्हें
कोल उत्तिदेव निर्णय विज्ञान रह रहे हैं, ज्ञेया मूले उन्हें गृहद्वे
उपर अपश्यत् शूक्रि त्रि। रेत्युक्ति वारित्वे-उक्तिप्राप्ति अहं ग्रन्थ
प्राप्ति 'इत्येवंविविती' शूक्रत्वा छोड़ते हुए वर इस, अपर पाप्ता
ज्ञाहित्वे एवं लीलार्थ ग्रन्थ का उत्तराहं ग्रन्थ ('वीरामन') मध्यके
शूरुमूदन द्वारा छोड़ते हुए वर इस रह रहे हैं।

एवं प्रतिकाद्य विज्ञाय वाय 'वीरामन' वर ग्रहकृत
शूरुमूदन उत्तिदेव अवश्यक रह रहे हैं। वीरामन अवश्यक रुद्यत्तप्राप्ति
आवश्यक अवश्यक विविलनी फूली इत्यर्थताय अथवा वैष्णवीर

२
मानी जाणीवाचे- ह्या गुरुभ्या उपलब्धीचे खाली रस, वित्त घट्टमूदन 'वीरामना' ग्रन्थ
कृष्णप अहोर गुरुशास्त्र लाभात नि। मार्क्षी लोनेलोप (Penelope), कलाकृती
गुणाम (Canace) इत्या द्वारामात्राद्विनी दिदो (Dido) टैंडर शृंखलेहै
पर्यंत उचिद वीर-काव्याती "Heroic Epistles" इत्या मार्गात्मक आठिरिति
लाभात है। घट्टमूदनउ अंग आदिगे कलाकृती अस्त, अस्तित्वात्मात्मा देवी
कृष्णी इत्या द्वारामात्राद्विनी अस, टैंडर संखलेहै वीरामनवाच पृथिवी
लाभात है। १८६९ एप्रिलात्ये वीरामना लाग्य इच्छित इत्या ग्रन्थ राष्ट्रग्रन्थात्ते
प्रशंस्नेत्रे शृणवित रस, अंग निळेते गृहग्रन्थाप्युपर्युक्त घट्टमूदन असामाय
शृणुत्तरात्त असाम लाग्य गिर्वाहन, "राष्ट्रग्रन्थात्ते" राष्ट्रे वराष्ट्राप्युपर्युक्त
विद्युत्तमाप्युक्त असाम ज्ञानात्त ज्ञानात्त लाभात्तिलेन।

ଶ୍ରୀକୃତିବାନ୍ଦୁ- ଇଷ୍ଟକୁରୁ ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତିଲା, ମେଘତ ପ୍ରତି ଜୟ,
ଦୂରକଳୀଖ ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି, ଦୂରକଳୀଖ ପ୍ରତି କୌଣସି, ନାଥପୁର ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି
ଅଞ୍ଜନୀପୁର ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି, ଶ୍ରୀକୃତି ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି, କୃପାପୁର ପ୍ରତି
ଶ୍ରୀକୃତି, ଶ୍ରୀକୃତି ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି, ଶ୍ରୀକୃତି ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି
ପ୍ରତି ଉତ୍ସାହ ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି। ଶ୍ରୀ ଅରମାତେ ଉତ୍ସାହ
ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତି ପାଇନ୍ତି ନିଶ୍ଚାଲିତି- ହେଉ ଶ୍ରୀକୃତି ଉତ୍ସାହ ପାଇନ୍ତି
କାହିଁ । ୧୨, ଦୈତ୍ୟାତ୍ମିକ- ପ୍ରେମଜ୍ଞଦେଵ ଅନୁଗ୍ରହ ତିଜ୍ଞ କୃତ
ଶ୍ରୀକୃତି ଏହା । ଅହୋ, ଶୂରୁଧୀ, ପ୍ରେମଜ୍ଞଦେଵ ଶ୍ରୀକୃତିଦୟବୀର ଏହା ପ୍ରତି
ଶ୍ରୀଯ ଅନୁଗ୍ରହ । ୨୫, ଶ୍ରୀକୃତି ପାଇନ୍ତି- ଶ୍ରୀକୃତି ପରମାନନ୍ଦ
ପ୍ରେମଜ୍ଞ କୃତ ଶିଶୁ ଶ୍ରୀକୃତ ଏହା ୧୩ । ଜୀବବୀଦୟବୀର ଏହା ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତ
ଅନୁଗ୍ରହ । ୬୫, ଶ୍ରୀକୃତ ପାଇନ୍ତି, ଶ୍ରୀକୃତ ଅଦ୍ୟତିନ ଶ୍ରୀକୃତ
ଶ୍ରୀକୃତ ଅନୁଗ୍ରହ- ତିଜ୍ଞ କୃତ ଶିଶୁ ଶ୍ରୀକୃତିଜୀବନର ଏହା । ଅନୁଗ୍ରହ,
ଶ୍ରୀକୃତି, ଅନୁଗ୍ରହ- ଶ୍ରୀକୃତ ପ୍ରତି ପାଇନ୍ତି ଏହା ପ୍ରତି ଶ୍ରୀକୃତ, ୧୫,
ଶ୍ରୀକୃତ ପାଇନ୍ତି- ଶ୍ରୀକୃତ ପରମାନନ୍ଦ ଶ୍ରୀକୃତି, ଶ୍ରୀକୃତ ପାଇନ୍ତି
ଏହା । ଶ୍ରୀକୃତ ଶ୍ରୀକୃତ ଏହା ପାଇନ୍ତି ଶ୍ରୀକୃତ ଅନୁଗ୍ରହ । ଶ୍ରୀକୃତ ଶ୍ରୀକୃତ
ପାଇନ୍ତି ଏହା ପାଇନ୍ତି ଶ୍ରୀକୃତ ଅନୁଗ୍ରହ, ଅହୋ କରିବୁବୋବୁ ଏହା ପାଇନ୍ତି
ଅନୁଗ୍ରହ- ଶ୍ରୀକୃତ ଶ୍ରୀକୃତ ପାଇନ୍ତି, ଅହୋ କରିବୁବୋବୁ ଏହା ପାଇନ୍ତି

ପ୍ରମାଣନୀୟ, ଯୁଦ୍ଧମୂଳର କୁରେ ମନ୍ତ୍ରମାଲା ଯୁଦ୍ଧମୀହେତୁ ଦୃଢ଼ିତ ଛାଏ, କୁନ୍ଦା
ଏହାତିଥି ଶାତକ୍ରୁଷ୍ଣ ପେଣେଟ୍ କୁଞ୍ଚିତ କରିଛନ୍ତି, ଆ ଦୈର୍ଘ୍ୟରେ ଆଶର୍ପା ଅର୍ଥ
ଏହାତିଥି କୁଞ୍ଚିତ କରିଛନ୍ତି, କିମ୍ବା କୁଞ୍ଚିତ କରିଛନ୍ତି ।